UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180990

UNIVERSAL
LIBRARY

* कला मंडल का द्वितीय पुष्प *

सिकता-कण

(कविता संग्रह)

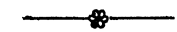

रचियता :—
माधवप्रसाद शुक्ल " मनोज "

प्रकाशक—कला मंडल सागर.

प्रकाशक:—

कला मंडल सागर

मूल्य :- एक रुपया चार आना

मुद्रक:—

श्री गोविन्द प्रिंटिंग प्रेस, झिरना साग

गीत और गायक

जब सत्य का सुन्दरता से सँयोग होता है, तब कला का आविर्भाव होता है। कला सत्य की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति है। यदि सत्य न हो तो कला की कल्पना नहीं हो सकती और सौंदर्य न हो तो अभिव्यक्ति कला नहीं कही जा सकती।

जीवन की मंजिल पर चलते मानव हृदय में उठने वाली अनुभूतियाँ जीवन का सत्य होती हैं। ठीक है कि एक अनुभूति के पश्चात दूसरी अनुभूति उठती है।

जीवन के विशाल सागर में क्षण-प्रति क्षण असंख्य अनुभूतियाँ उद्वेलित हुआ करती हैं। उनकी नश्वरता को देख दार्शनिक उन्हें सत्य न मानेगा लेकिन अपने आविर्भाव के क्षण में मानव हृदय को परिपूर्णतः आप्लावित करने की उनकी शक्ति ही उनका सत्य है। और जब तक हमारी अनुभूतियों में यह सत्य मौजूद है, उनकी अभिव्यक्ति कला हो सकती है।

मानव कितना भी भिन्न क्यों न हो उसने धर्म, जाति वर्ण, सामाजिक व्यवस्था आदि के कितने भी व्यवधान क्यों

न खड़े कर लिये हों लेकिन जिस क्षेत्र में वह सम्पूर्णतः समान है वह है अनुभूतियों का क्षेत्र । कौन है जिसके हृदय में फूलों जैसे सुकुमार बच्चों को देखकर स्नेह नहीं उमड़ पड़ता ? कौन है जिसका हृदय अनाचार को देख रोष से नहीं फड़क उठता ? चारों ओर चलने वाले आज के दोहन और शोषण को देख किसकी आत्मा विद्रोह के लिये नहीं फुफकार उठती ? और कौन है जिसका हृदय भूख से तड़पते मानव समाज को देख करुणा से चीत्कार नहीं कर उठता ?

हो सकता है कि हमारी इस या उस अनुभूति की तीव्रता में उस या इस मानव की अनुभूति की तीव्रता से अंतर हो हमारे संस्कारों, वातावरणों ने हमारी इस या उस अनुभूति को कम या ज्यादा तीखा बना दिया है- लेकिन यह एक अमिट सत्य है कि हड्डी और माँस की तरह जिस प्रकार हमारे शरीरों का गठन समान है, उसी तरह अनुभूतियों की दृष्टि से हमारे मनो जगत का निर्माण भी एकसा ही है ।

अनुभूति जहाँ शब्दों के रथ पर चढ़कर निकलती है वहाँ काव्य का सृजन होता है और जहाँ अनुभूति के वाहक शब्द संगीत की ताल पर अपनी गति संभाल कर चलते हैं, वहाँ गीति काव्य का अविर्भाव होता है ।

अनुभूति की तीव्रता शब्दों की स्वरमयता, अभिव्यक्ति की सुकुमारता और संक्षिप्तता गीति काव्य की मुख्य विशेषतायें हैं । मिश्री के ढेले का कण कण जिस तरह माधुर्य से ओत प्रोत होता है, गीति काव्य की प्रत्येक कड़ी उस प्रकार अपने माधुर्य में परिपूर्ण होती है ।

सिकताकण "मनोज" उपनाम से हिंदी जगत को आकृष्ट करने वाले सागर के तरुण गायक माधव प्रसाद जी शुक्ल की प्रारम्भिक रचनाओंका संग्रह है। "मनोज" का संसार सुख -दुख पीड़ा क्रीड़ा का संसार है। उनके संसार में जीवन के आनंद के साथ उसकी तिक्तता भी है। जीवन से सम्बद्ध ये सभी अनुभूतियाँ उसके काव्य में सहचर हुई हैं। पर इन सब के ऊपर वह प्रेम का साधक है और मस्ती का आराधक है।

सिकता-कण में यही प्रेम और मस्ती के भाव मानो बोल उठे हैं। उसके प्रथम गीत से प्रकट है कि मनोज के हृदय में प्रेम की वेदना है। वह किसी प्रिय के चित्र को दृगों में सँजोए है।

कल्पना का लोक मेरा,
हूँ खड़ा पथ पर अकेला।
आज आमंत्रित किसी को,
मैं विजन में कर रहा हूं।

एकाकीपन से क्षुब्ध होकर उसकी आत्मा चीखती है-

आज किससे बात करलूं,
दूर हैं नक्षत्र मेरे।

और मिलन की सुखी करके वह सोच रहा है—

कैसे भूलूँ घनी छाँव को,
फूट सकी कब एक किरन।
नयन बावरे भर भर आये,
जब जब तेरे उठे चरन।

और विरह की इस वेदना में वह निवेदन करता है—

श्याम घन में है तुम्हारी,
अर्चना की मौन घड़ियाँ।
क्षुब्ध नभ में है तुम्हारी,
सान्त्वना की मुग्ध लड़ियाँ।

और

दुख भरे व्याकुल हृदय की,
तुम सजनि मधु दमिनी हो।

विरह की इस व्यथा के तीव्रतर होते होते मनोज का स्थूल प्रिय विराट में विलीन हो चलता है। किसी अस्थि माँस की प्रेयसि की उसकी कल्पना प्रकृति प्रेयसी में लीन हो चलती है और उसका हृदय गा उठता है—

आवाज तुम्हारी ही तो है।
तुमने तारों में चंचल सी,
झिल मिल मादकता है भर दी।
मद मरी चाँदनी रातों में,
कंचन सी मोहकता धर दी।
झिल मिला उठी जो पलकों में,
झिल मिला उठी जो सपनों में।
तुम एक लहर हो बेसुध सी,
भर गई नशा जो नयनों में।

इस लघु से विराट की ओर उन्मुख होता मनोज का प्रेम उसकी लेखनी में अधिकाधिक माधुर्य और निखार लाता है-

तुम तो सरिता की एक लहर हो,
यह कूल तुम्हारा अलिंगन।

और

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो
मेरी प्यास बुझा सकती हो।

जैसे मधुर गीतों की सृष्टि कराता है।

अस्तु, सिक्ता कण एक प्रेमी हृदय की वेदना के उद्गार हैं। कवि के स्वप्न फूल से कोमल हैं लेकिन वह कहता है —

शूल में मेरी जवानी!
चल पड़ी ले आँसुओं में,
जिन्दगी अपनी कहानी।

और भी-

प्रीत मेरी जिन्दगी से,
जिन्दगी सँगीत में है।

मनोज की यह प्रीति और यह जिन्दगी मैं आशा करता हूं कि कविता प्रेमियों को आनंद देगी। मुझे विश्वास है कि उनकी नवीन कृतियों के संग्रह काँटों के फूल और इन्द्रजाल भी शीघ्र साहित्यकों के समक्ष प्रस्तुत हो सकेंगे। मैं मनोज के अधिकाधिक विकास का आकाँक्षी हूं।

ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी
१२ | २ | ५२

आत्माभिव्यक्ति की साध मानव हृदय की बहुत बड़ी साध है। अपने हृदय की दूसरे से कह लेने पर हृदय हलका हो जाता है। दुख हो या सुख, मनुष्य उसे अपने हृदय तक ही सीमित नहीं रख सकता। यही सृष्टि के संगीत का रहस्य है और आत्माभिव्यक्ति की यही आतुर आकाँक्षा, यही प्यास काव्य का उद्गम है।

वैसे प्रत्येक व्यक्ति में अनुभूति का ज्वार रहता है। परन्तु प्रत्येक के पास अभिव्यक्ति की शक्ति नहीं होती। अपने आप को व्यक्त कर सकने की यह शक्ति ही कवि की अपनी विशेषता है जो उसे लोक से साधारण जन समुदाय से प्रथक करती है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में वही दुख, सुख, आशा, निराशा. तृष्णा- परितृप्ति आकाँक्षाएँ तथा सपने रहते हैं परन्तु वह उन्हें व्यक्त नहीं कर पाता, और जब कवि के स्वर में अपनी आत्मा के बोल मुखर होते हुए पाता है तो मुग्ध होता है, उसे लगता है कि वह अपने आप को व्यक्त कर सका है, कवि की रचना में उसे आत्माभिव्यक्ति का आनन्द मिलता है। यही कवि का 'स्व'-अपनी वैयक्तिक सीमाएं लाँघ कर लोक के 'स्व' को अपने में समाहित कर लेता है। उसका स्वान्तः सुखाय उसके पाठकों का स्वान्तः सुखाय हो जाता है। जिस कवि में मानव अनुभूतियों का शाश्वत सत्य जितना अधिक होगा उस कवि की रचना उतनी ही लोक रंजक और प्रिय होगी। और जो कवि अपनी भावनाओं

के प्रति जितना ईमानदार होगा उसकी अभिव्यक्ति में यह सत्य उतना ही स्पष्ट और पूर्ण उतरेगा। कवि का हर गीत उसका अपना ही नहीं एक वर्ग, एक समाज, एक समुदाय का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है और साथ ही कुछ अंशों में समस्त मानव समाज का। यह बात सिकता कण के कवि मनोज के साथ भी है उसने अपनी जो अनुभूतियाँ अपने इन प्रारंभिक गीतों में बाँधी हैं वे उसकी कल्पना के लोक की झाँकी हैं। कई स्थानों पर यह झाँकी बाँकी है - रम्य है। मनोज के ये गीत एक तरुण के गीत हैं जो प्यार की मंजिल का पथिक है इसलिये सभी गीत प्रेम परक हैं। उसने ——

रोज प्रातः और सँध्या,
के सलौने देख मेले।
इस धरा पर प्यार लेकर
खूब पथ पर खेल खेले।

प्यार लेकर उसने जो खेल खेले हैं वे उसे सब याद हैं और उसके गीतों में वे खूब उतरे हैं।

याद जीवन की कहानी,
के लिखे थे गीत मैंने।

इस जीवन की कहानी में हम उसके प्रिय की हर जगह छाया हुआ पाते हैं।

उसका यह प्रिय न तो ब्रह्म है और न प्रकृति प्रेयसी परन्तु उसके प्रिय में निखिल सृष्टि को रंग देने की ताकत है और यह ताकत न भी हो तो उसने कवि की दृष्टि को तो अवश्य बदल दिया है और इस तरह उसके लिये सृष्टि भी बदल गई है —

स्वरित सावन की घटा में
ही तुम्हारी बाँसुरी है
सजग आँखों में छलकती
रूप की ही माधुरी है

वह स्वीकार भी करती है——

तुम एक लहर हो बेसुध सी,
भर गई नशा जो नयनों में।

मनोज के इन गीतों में आँसू कम हैं — कहिये हैं ही नहीं। एक उल्हास ही है। — वह रात की माधुरी का पुजारी होते हुए भी प्रात की आँकाक्षा करता है-

प्राण गा दो गीत भोले
रात के मीठे स्वरों में
मुस्करा कर प्रात बोले

साथ ही वह चाहता है कि उसके प्रिय का स्वर द्वैत को मिटा दे——

गान में लहरें उठा दो
धरणि अंबर एक हो ले।

मनोज गायक है जो प्रिय के गीत गाता है और गीतों में प्रिय को पाता है। गीत और मनमीत में अंतर नहीं रह गया है उसके निकट—

मीठे स्वर में गा लेता हूं
क्योंकि रागनी तुम्हीं मीत हो।
जीवन स्वर की एक ताल पर
चंचल सा प्रिय तुम्हीं गीत हो।

मनोज के गीतों में एक सादगी और तन्मयता है। स्वर में माधुर्य है। कई जगह उसने बड़े सलोने प्रयोग किये हैं।

मुझे विश्वास है कि सिकता-कण की कवितायें, कविता प्रेमियों को अपनी ओर आकृषित कर लेंगी।

मनोज भविष्य की आशा

१६ फरवरी ५२ } शिवकुमार श्रीवास्तव
सागर विश्वविद्यालय }

दुख भरे व्याकुल हृदय की
तुम सजनि मधु दामिनी हो।
मौन मेरी विस्मृति में
तुम सजनि ! मन्दाकिनी हो।

१

मैं किसी का चित्र लेकर,
इन दृगों में भर रहा हूं।

कल्पना का लोक मेरा,
हूं खड़ा पथ पर अकेला।
आज आमंत्रित किसी को-
मैं विजन में कर रहा हूं।

रोज प्रातः और संध्या-
के सलौने देख मेले।
इस धरा पर प्यार लेकर,
खूब पथ पर खेल खेले।

याद! जीवन की कहानी-
के लिखे थे गीत मैंने।
याद मुझको आ रहे जो,
पा लिये थे मीत मैंने।

चित्र बनकर छा रहे जो,
कर रखी थी प्रीत मैंने।
स्वप्न जीवन के अधूरे,
इस हृदय में धर रहा हूं।

मैं किसी का चित्र लेकर,
इन दृगों में भर रहा हूं।

२

आज किससे बात कर लूँ ,
दूर हैं नक्षत्र मेरे !

सो गई यह निशा उनींदी ,
किस तरह पलकें झपा लूं ।
बढ गई है पीर कितनी ,
कौन ? मैं किससे नपा लूं ।

आज अधरों में बंधे से -
सूखते हैं मंत्र मेरे ।
आज किससे बात कर लूं ,
दूर हैं नक्षत्र मेरे ।

प्राण ! जीवन अंक में ही ,
रह गया प्रिय मंत्र ऊना ।
हो गये क्षण और दूने ,
रह गया है पंथ सूना ।

रौंधती है मौन बाचा -
मौन हैं वे चित्र मेरे ।
आज किससे बात कर लूं ,
दूर हैं नक्षत्र मेरे ।

(३)

ओ परदेशी कभी न होना,
इन नयनों से ओझिल ।

कैसे भूलूं घनी छाँह को,
है फूट सकी कब एक किरन ।
नयन बावरे भर भर आये,
जब जब तेरे उठे चरन ।

रोक सका कब तुम्हें राह पर,
इन प्राणों से जूझ गये हो ।
जाने वाले कहते कुछ भी,
प्राणों से कब बूझ गये हो ।

कैसे खींचूं इन बाहों को,
प्यार तुम्हारा साध चुकीं हैं ।
कैसे फेरूं इन आँखों को,
चित्र तुम्हारा आँक चुकीं हूं ।

मेरी स्वप्निल मधु बसंत की,
बेकल हो कहती कोकिल ।
ओ परदेशी कभी न होना,
इन नयनों से ओझिल ।

(४)

प्यार आँखों में बटोरे
पाँव आँसू से पखारूं ।

जानता हूं अश्रु दहते
किन्तु हिम कण ढार लूंगा ।
मैं निशा की शरद चन्द्र
की किरण को गार लूंगा ।

दग्ध प्राणों की विषमता
तुहिन मोती से उतारूं ।
सिक्त पंखुड़ि की सुरभिता
झूम तुम पर आज वारूं ।

जानता हूं अश्रु-खारे
किन्तु मधु में घोल लूंगा ।
प्राण जीवन की तराजू
पर मधुरता तौल लूंगा ।

प्राण, प्राणों की विकलता ,
में मधुरता भर निखारूं ।
प्यार आखों में बटोरे
पाव आँसू से पखारूं ।

——

(५)

गीत मेरी भावना के
अक्षरों के हार ले लो ।

क्या हृदय की मौन भाषा
पास आकर कह सकोगी ।
कामना का कोष मेरा
साथ ले कर रह सकोगी ।

मैं अकिंचन भार मेरा
धर सकोगी सह सकोगी ।
है नहीं कुछ पास मेरे
साँस में तुम रह सकोगी ।

गीत की दो चार लड़ियाँ ,
ले सकोगी चित्र में तुम ।
ये शब्द मेरी जिन्दगी के,
भर सकोगी चित्र में तुम ।

भर सकोगी रंग अपने ,
चित्र पट पर भावना के ।
भर सकोगी तूलिका से ,
चित्र मेरी सान्त्वना के ।

चेतना की मौन गलियों ,
में नया संदेश मेरा ।

भाव ले लो चाव ले लो ,
और जी का प्यार ले लो ।
गीत ! मेरी भावना के ,
अक्षरों के हार ले लो ।

६

आज सब कुछ है समर्पित,
तुम सजनि ! अनुरागिनी हो।

स्वरित ! सावन की घटा में,
ही तुम्हारी बाँसुरी है।
सजग आँखों में छलकती,
रूप की ही माधुरी है।

हो रिमाझिम इस अवनि में,
तुम सजनि ! मन भावनी हो।
झूम मधु रितु की गली में,
तुम सजिन ! उन्मादिनी हो।

श्याम घन में है तुम्हारी,
अर्चना की मौन घड़ियाँ।
क्षुब्ध नभ में है तुम्हारी,
सान्त्वना की मुग्ध लड़ियाँ।

दुख भरे व्याकुल हृदय की,
तुम सजनि ! मधु दामिनी हो।
मौन मेरी विस्मृति में,
तुम सजल ! मन्दाकिनी हो।

दीप में भी है तुम्हारी,
प्रीत की स्निग्ध बाती।
जल रही जो रात में भी,
तिमिर में आलोक छाती।

प्रात के सपने सजाकर,
तुम सजनि ! गृहस्वामिनी हो।
हो मुखुर ! मुखरित विभा में,
तुम सजनि ! स्वर रागिनी हो।

आज सब कुछ है समर्पित,
तुम सजनि ! अनुरागिनी हो।

———

(७)

ये लज्जा भरे नयन हैं क्यों ?

तुम नीलगगन की चन्द किरण,
तेरा उज्जवल सा मोहकपन।
पी गया विहंसता मैं चकोर,
तुमने मेरा भरमाया मन ।

मैं भूल गया अपनी सुधि तक,
इन नयनों ने जब से देखा ।
मैं भरम गया प्रिय पल भर में,
तुम तो जादू की सी रेखा।

मिल गये तुम्हारे मुक्त नयन,
मादक सपनों के छाँव तले।
मैंने तो उनको चूम लिया,
अब कहीं छिपा लो दृष्टि भले।

जो चपल रसीले झुके नयन,
लिखते हैं गीत वरौनी में।
उर की भाषा लिखती रहतीं,
भोली क्यों आँख मिचौनी में।

मैं गीत तुम्हारे पढ़ लेता,
है गीत-प्रीत में अंतर क्या?
जब गीत प्रीत में है नाता,
फिर आज परस्पर अंतर क्या?

तुम को तो प्रिय संकोच हुआ,
उस लाज भरी सी चितवन में।
मुझको भी तो प्रिय होश हुआ,
मद होश हुआ था जिस क्षण में।

उस मधुर प्यार की मुरली पर,
शरमाई मेरी राधा क्यों।
प्रिय आज समर्पण के क्षण में,
ये लज्जा भरे नयन हैं क्यों?

— —

(८)

आवाज तुम्हारी ही तो है !

तुमने तारों में चंचल सी ,
झिलमिल मादकता है भरदी ।
मद भरी चाँदनी रातों में ,
कंचन सी मोहकता धर दी ।

झिलमिला उठी जो पलकों में ,
झिलमिला उठी जो सपनों में।
तुम एक लहर हो बेसुध सी '
भर गई नशा जो नयनों में ।

कण कण में मैंने देख लिया,
क्षण क्षण में मैंने देख लिया।
पहने परिधान लुभाने को
इन दो आँखों ने देख लिया।

इन साँसों ने भी जान लिया
इन प्राणों ने भी जान लिया।
जो चन्द्र तुम्हारा चंचल है
घूंघट में भी पहचान लिया।

तुम दीप शिखा सी जीवन में
मैं दीवाना कुछ दोष नहीं।
तुम जलती हिलती रहो यहीं
मैं परवाना कुछ होश नहीं।

ये प्राण तुम्हारे ही तो हैं
ये गान तुम्हारे ही तो हैं।
मेरी काया की नगरी में
अरमान तुम्हारे ही तो हैं।

ये नाज तुम्हारे ही तो हैं
ये साज तुम्हारे ही तो हैं।
अब तक धमनी में बजती जो
आवाज तुम्हारी ही तो है।

— —

(६)

मैं क्यों न अरी भरमाऊँगा !

तेरे यौवन पर झूम गई
मेरे जीवन की तरुणाई ।
तेरे इन चंचल नयनों की
कब नप सकी हूं गहराई ।

अरमान भरी इस नैया पर
मन की लहरों का आलिंगन।
फिर मुझे बना देता पागल
री मीठे अधरों का चुम्बन।

इन लोल कपोलों की लाली
पर शरमाती बाँकी चितवन।
शरमाये हुए चाँद तारों-
पर हुआ निछावर यह तन मन।

अधरों की हंसी फूल जैसी
पाकर दो पल मदहोश हुआ।
पंखुड़ियों की मकरंद भरी
हाला पी तो क्या दोष हुआ।

आखिर जब इतनी मोहकता
मैं क्यों न अरी ललचाऊँगा।
मस्ती का नया जोश मुझ में
मैं क्यों न अरी भरमाऊँगा।

मैं क्यों न अरी भरमाऊँगा ?

(१०)

गगन के चाँद-चाँदनी मिल-
धरा पर प्यार करते हैं।

चला जब चाँद सुरपथ से
धरा पर चाँदनी बिखरा।
निशा की मुग्ध वीणा पर
हृदय की तान को दुहरा।

जिसे सुन एक मस्ती भर
मलय से घोंसला डोले।
नशीली हो गई आखें
नये सपने सजा हौले।

अजाने में ये पंछी के
सुरीले कंठ फिर बोले-
गगन के चाँद-चाँदनी मिल
धरा पर प्यार करते हैं।

बिछाती चाँदनी नभ से
मिलन का दूधिया आँचल।
लुटाती शुभ्र मोहकता
लगाकर चाँद को काजल।

तभी अधरों के कुंजों से
विहंस कर फूल खिलते हैं।
सरोवर की तरंगों से
लिपट कर कूल मिलते हैं!

जिन्हें ये देखकर तारे
चले चुपचाप कहते हैं-
गगन के चाँद चाँदनी मिल
धरा पर प्यार करते हैं।

गगन के चूम कर मोती
निछावर रात करती है।
महक कर रात की रानी
विहंस अभिसार करती है।

समीरन चाँदनी में से
निखर स्नान कर आती।
द्रुमों के मौन दृन्तों पर
तनिक झोका लगा जाती।

धरा का एक दीपक ले
भुला कर गीत को गाती-
गगन के चाँद चाँदनी मिल
धरा पर प्यार करते हैं।

——

ओ सखि तेरे आँगन में
मैं, प्यार लुटाने आता।
प्रिय भावों में तुल जाती
जीवन में मधु की भाषा।
तुम गाती हो! सुनता हूं
सुख पाती मेरी आशा।
अपनी आशा के फूलों
से तुझे सजाने आता।
ओ सखि तेरे आँगन में
मैं प्यार लुटाने आता।

हर बार लुटाया करता
चिर संचित अपनी निधियाँ।
हर रोज चढ़ाया करता
हूं प्रिय चरणों में कलियाँ।

कलियों की कोमलता ले
सर्वस्व लुटाने आता।
ओ सखि तेरे आँगन में
मैं, प्यार लुटाने आता।

हर बार निछावर होता
हैं तेरी छवि पर ये मन।
मधु सुधियों में मुस्काता
जाता है चंचल यौवन।

जिसमें अपने दृग-तारों-
के दीप जलाने आता।
ओ सखि तेरे आँगन में
मैं प्यार लुटाने आता।

— —

१२

जानती हो तुम प्रिये
उस पूर्णिमा की रात को।

जबकि उडगन हंस रहे थे
और चन्द्रा मौन सी थी।
गोद में पल कर प्रकृति की
सुरभि कलिका कौन सी थी।

खिल चली जो झूम झिलमिल
गा रही थी मधुर स्वर में।
भर किसी की बात को।
उस पूर्णिमा की रात को।

जबकि सागर में खिले थे
कल्पना के फूल मेरे
चूमती थी उछल लहरी
मुस्कराती कूल घेरे।

और अंतर की चकोरी
शाँत जल में तारकों की
लख रही थी पाँत को।
उस पूर्णिमा की रात को।

डोलते दो मौन पंछी
झूमता उन्मत्त पीपल
जबकि नीरव में खुले थे।
वे पवन के पंख शीतल।

मुक्त थपकी में झुलाये
शीत आहों को पिलाकर
छू रहे थे गात को।
उस पूर्णिमा की रात को।

जानती हो तुम प्रिये-
उस पूर्णिमा की रात को

— —

प्राण गा दो गीत भोले।

मौन हो दिशि के तटों में
वह पथिक तो थम गया है।
प्राण! फिर भी बाट जोहे
बावरा मन रम गया है।

एक स्वर पर तुम बढ़ा दो
प्रिय पथिक के चरण हौले।
प्राण गा दो गीत भोले।

इस सरोवर के हृदय में
सजल नीरवता पड़ी है।
चूर अंबर की व्यथा भी
पिघल अंतर में जड़ी है।

गान में लहरें उठा दो
धरणि अंबर एक होले।
प्राण गा दो गीत भोले।

आज सूनी सी निशा में
तार वीणा के बजा दो।
बद्ध प्राणों के मचलते-
वे पुरातन स्वर लजा दो।

रात के मीठे स्वरों में
मुस्करा कर प्रात बोले।
प्राण गा दो गीत भोले।

— —

१४

गगन में मान पी का है
कि तारे झाँक लेते हैं
चकोरी देख लेती है
मचलते चन्द्रमा के स्वर
धरा चुप लेख लेती है

गगन का गात मतवाला
नया ही राग भर लाया
विरहणी के हृदय में जो
तुहिन का भार धर आया

भटकता पास मलयानिल
नया संदेश ले छाया

गगन की श्याम अलकों में
पगा अरमान हिय का है
गगन में मान पी का है

थकी जो प्राण को बाजी
कि आशा जीत लेती है
बटोही को दिखा मंजिल
जरा गा गीत लेती है

कि मंजिल के भरोके में
प्रतीक्षा हो गई पगली
सजल पलकें बिछाये जो
निशा के साथ हो उजली

कि गुम्फित फूल आँसू के
नया सिंगार कर निकली
जिसे रे देख मन ही मन
लजा कर गगन के हीरक

रहे यह सोचते कुछ क्षण
नयन का हार नीका है
गगन में मान पी का है

सरोवर के किनारों ने
सरस झंकार है छोड़ी
प्रीत के आ गये पाहुन
सुनाती हंस की जोड़ी

नहीं तू आज विह्वल हो
व्यथा का पोंछ ले पानी
हजारों दीप चाँदी के
गगन में देख ले रानी

उड़ी उस पार बगलों की
सुहानी पाँत दीवानी

कि जिसके श्वेत वैभव पर
गगन का चाँद फीका है
गगन में मान पी का है

——

१७

तुम तो सरिता की एक लहर-
यह कूल तुम्हारा आलिंगन।

जब पुरवैया के झोकों से,
अलसाईं सीं तुम जाग गईं।
पानी की नीली शैय्या पर,
चाँदी सा चंदा माँग गईं।

तब रात सुहानी आई है,
चंदा की किरणों पर धीरे।
भर स्वप्न चाँदनी लेती है,
इतराती नयनों पर धीरे।

हो पास कूल के अधरों तक,
आया मधुमय मादक चुम्बन।
तुम तो सरिता की एक लहर,
यह कूल तुम्हारा आलिंगन।

आती अनुराग भरे पगली,
मलयज की मस्त बहारों में।
अपना लहराता सा यौवन,
चमकाती चाँद सितारों में।

झिलमिल झिलमिल होकर कंचन,
आया कि तुम्हारा प्यार जहाँ।
उस चंदा की परछाईं में,
तुम भूल गईं मँझधार कहाँ।

इस पार डोलती आती है,
मधु सी मुस्कान भरी कंपन!
तुम तो सरिता की एक लहर,
यह कूल तुम्हारा आलिंगन।

— —

१६

मेरी रानी इस वीणा में-
अभी सुरीला एक तार है।

मीठे स्वर में गा लेता हूं,
क्योंकि रागनी! तुम्हीं मीत हो।
जीवन स्वर की एक ताल पर,
चंचल सा प्रिय तुम्हीं गीत हो।

माना इस उर में पीड़ा है,
तुम पीड़ित होकर मत फूटो।
मैं साँसों में लहराता हूं,
मेरे स्वर तुम कभी न रूठो।

आज समझ लो और परख लो
आकुल प्राणों की धड़कन में,
अभी लजीला एक प्यार है।

मेरे भाव 'तुझे भर लेते,
रंगिनि ! अकुलाती तड़पन में।
मेरे चाव तुझे कस लेते,
बंदिनि ! साँसों के बंधन में।

साँसों का यह बंधन रानी,
साँसों में ही तोड़ न देना।
प्राणों की मधु तड़पन रानी,
इन प्राणों से छोड़ न देना।

आज लहर लो तनिक सिहरलो
देखो अंतर की प्याली में,
अभी नशीला एक ज्वार है।

मेरी आँखों की पाखों में,
ललक भरा मधुमय पराग है।
तू संगिनी ! मेरे गीतों में-
तेरा ही तो रंग राग है।

आज हृदय लो और देख लो
मेरी आँखों के परदे में-
अभी सजीला एक भार है।

मेरी रानी इस वीणा में,
अभी सुरीला एक तार है।

१५

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो-
मेरी प्यास बुझा सकती हो।

सजनि वही रस भरी डगर की,
मुझे याद पनघट की गलियाँ।
लहर चूमती पगडंडी तट,
सस्मित बलखातीं वे कलियाँ।

जबकि वहीं उन तेवरैया के,
फूलों की प्याली खाली थी,
तब कहीं झुमक कर के तुमने,
वेसुध सी मदिरा ढाली थी।

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो,
मेरे स्वप्निल से अतीत के,
वे क्षण पास बुला सकती हो।

जबकि वहीं खेला करती थीं,
चंपा बेला और चमेली।
किन्तु कहीं मकरंद लिये तुम,
खोजा करती मुझे अकेली।

तब पूनम की एक किरन वह,
तेरी चूनरिया चमका कर -
मोती से वे चाँद सितारे,
मढ़ देती तेरे यौवन पर।

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो,
उसी सलौनी रात चाँदनी :
का मधुहास लुटा सकती हो।

ये तो विस्मृति की बातें हैं,
कैसे मैं मन को समझालूं।
सजनि ! उसी रस भरी डगर की,
कैसे पगडंडी सुलझा लूँ।

जिस पर अब तक भी अंकित है,
तेरी मेरी एक कहानी।
पनघट की सूनी लहरों पर,
अब भी वही चढ़ा है पानी।

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो,
दबी हुई सोई लहरों पर -
मधु उच्छ्वास उठा सकती हो।

सच कहता हूं तुम्हीं एक जो,
मेरी प्यास बुझा सकती हो।

— —

१८

बंद रहने दो पलक में,
झिलमिलाते ये सितारे।
क्योंकि इन से पूंछना है,
कौन आता रोज द्वारे।

पूंछता हूं! क्यों हृदय का
विकल कोलाहल समाया।
आज सोने में सुहागा,
सा उतर किसने मिलाया-

दीप की स्वर्णिम शिखा जो,
इस अंधेरे में खिली है।
रात अंबर के दृगों में-
झिलमिलाती सी मिली है।

छा गया मेरे नयन में,
भी अधिक आ कर अंधेरा।
सो गया करवट बदल कर,
दुख भरा ये प्राण मेरा।

आ गया है आज धीरे,
कौन पलकों के किनारे।
दर्द सा कुछ कम हुआ है,
मत जगाना इसे प्यारे।

बंद रहने दो पलक में,
झिलमिलाते ये सितारे।
क्योंकि इनसे पूछना है,
कौन आता रोज द्वारे।

१६

मैंने साँस पवन पर साधे -
याद भरे वे गीत तुम्हारे।

याद मुझे है मधु बेला में,
याद उसी मधु आलिंगन की।
तोड़ नहीं सकती हो प्रिय तुम,
मन की सीमा इसबंधन की।

ओ मेरी तनमन की रानी,
मैं जीवन का गीत बावरा।
ढूंढ़ रहा मन के गुंजन में,
वीणा का मृदु तार तुम्हारा।

वही पुराना ! वही तराना ,
जो इस स्वर से निकल गया था।
आज वही फिर से लौटा है
जो प्राणों में मचल गया था।

जीवन की लघु अँगड़ाई पर ,
गाकर मैंने तुम्हें बुलाया।
मधु सपनों के डाल हिंड़ोले ,
जी भर पलकों पर दुलराया।

मैंने मानस की लहरों पर ,
हँस हँस चित्र तुम्हारे खींचे।
खूब तुम्हारी छवि को आँकी ,
इस नीले अंबर के नीचे।

काँटों को ले फूल समेटे ,
जीवन में उठ साँझ सकारे।
मैंने साँस पवन पर साधे ,
याद भरे वे गीत तुम्हारे।

२०

आँचल में भर कर प्रीत सखी ;
अपनी सुधियाँ दुहरा लेना ।

अपने नंदन की पलकों में ,
सपने ही मधुर सजाना है ।
अपने सपनों की दुनियाँ में ,
जीवन जब एक तराना है ।

वंशी के रन्ध्र फूंक देना ,
थोड़ा दे अधरामृत अपना ।
सूने मानस की मथुरा में ,
तुम भर देना अपना सपना ।

मोहन से खूब जूझ लेना ,
मेरा स्वर मीठा है कितना ।

अल्हड़ यौवन के गीत सखी ,
तुम गाकर मत बिसरा देना ।
आँचल में भरकर प्रीत सखी ,
अपनी सुधियाँ दुहरा लेना ।

तुम भूल न जाना वंशी वट,
प्रिय भूल न जाना विस्मृति पल।
जिसकी छाया में छिप २ कर,
देखे थे सावन के बादल।

उसविस्मृति पल में आज भीग,
मत अरी बहाना नयना जल।

विरही जीवन के मीत सखी,
तुम पाकर मत बिखरा देना।
आँचल में भर कर प्रीत सखी,
अपनी सुधियाँ दुहरा लेना!

२१

मैं सच कहता हूं आज सखे।

तुम संध्या के धुंधले पन में,
धीरे धीरे साकार दिखे।
मैं सच कहता हूं आज सखे

इन प्राणों में सन्नाटा भर,
धरती से अंबर तक डोले।
फिर झलक पड़े उन तारों से।
अंतर में किस आशा को ले।

तब से अंबर के आँसू भर,
मैंने आँखों में गीत लिखे।
मैं सच कहता हूं आज सखे।

उस मौन निशा का तरुण प्रहर
कैसे भूलूंगा कभी भला।
जिसमें मेरा बेसुध शिशु सा
शत सपनों का संसार पला।

तब से ही अपने अंतर में
सच ज्योतित कर ये दीप रखे।
मैं सच कहता हूँ आज सखे।

——

२२

यह छोटा सा दीप जलाकर,
थोड़ा सा स्नेह भरो सखि।

स्वर्ण शिखाओं पर हंसने दो,
मन के बिछड़े दीवानों को।
अभी प्रात तक जुड़ जाने दो,
प्रिय टूटे से वरदानों को।

और समर्पित हो जाने दो,
आलोकित हो अरमानों को।

समझ आरती काकण मुझको;
पूजा के हित भेंट धरों सखि।
यह छोटा सा दीप जलाकर,
थोड़ा सा स्नेह भरो सखि।

तुमने ही इन मृदुल करों से,
डाली अभी प्रीत की बाती।
इस कुटिया के अंधकार में,
तुम्हीं एक हो आती जाती।

दुख के इस काले अंतर में,
तुम्हीं भरोगी सुख की ज्योति।

विधि के इन निष्ठुर झोकों से.
अपने आँचल ओट करो सखि।
यह छोटा सा दीप जलाकर,
थोड़ा सा स्नेह भरो सखि।

२३

तूँ आई आकर चली गई।

व्याकुल कर मन के पंछी की
इक प्यास बड़ा कर चली गई।
तूं आई आकर चली गई।

मैं मान रहा हूं भूल हुई
इक प्यास खींच कर लाई थी।
मेरी ही तृष्णा का मृग जल
जो मुझे पिलाने आई थी।

मैं देख रहा कुछ सोच रहा,
कैसा अनहोंना घाव हुआ।
हो जैसे विधि की कील गढ़ी,
इस पथ पर बोझिल पाँव हुआ।

फिर क्यों इस घायल अंतर में
इक दर्द संभलता जाता है।
मैं देख रहा कुछ सोच रहा
तूं चुपके से किस गली गई।

तूं आई आकर चली गई।

२४

हो गया हूं आज बेसुध
फिर मिलन के हेतु रानी।

मानता हूं ! दूर हूं मैं
किन्तु मन तो पास तेरे।
जो न हटता है हटाये
यह रुपहली रात घेरे।

पा रहा अनुमान मेरा
यह तुम्हारी बात आई।
चन्द्र कलियों में सनी सी
याद लेकर रात आई।

नीलिमा की पाँखुरी से
प्यार के नीहार आये।
प्राण मेरी बेदना में
बेदना के गीत लाये।

देखता हूं मीन सरि में
चाहती हरदम उछलना।
चाहतीं ये मौन लहरें
आज कूलों तक मचलना।

हो गईं जो बावरीं सीं
फिर मिलन के हेतु रानी।
हो गया हूं आज बेसुध
फिर मिलन के हेतु रानी।

———

(२५)

अचल से बरदान किसके -
मौनता में आ पगे हैं।

छटपटाते प्राण से हैं,
किलकिलाती हूक मन की।
टकटकी भर नयन बाती,
भूलती सुधि आज तन की।

कौन सा यह ज्वार है जो
मचल कर अरमान हिय के
रात भर बेकल जगे हैं।

सिहरते से ये अधर हैं,
मचलती क्यों पीर है री?
इन पपीहे से दृगों में,
थम सका कब नीर है री?

कौन से वे आह के घन,
नयन नभ के पाहुने बन
निकल पलकों से लगे हैं।

गुद गुदाते भाव अभिनव,
प्यार का यह मोल है क्या?
बावले अनुराग के स्वर,
बिक गये बेमोल हैं क्या?

कौन सी मधु हाट जिसमें,
उलझ कर अनजान पन में -
आँख के मोती ठगे हैं।

अचल से वरदान किसके,
मौनता में आ पगे हैं।

———

२६

ये नयन तुम्हारे गीले हैं।

विकसित सीं उर कीं कलियों तक.
चुपके पव के झौके आये।
सपनों के नंदन में रानी,
क्या मिलने को आली आये।

जो इन रतनारे प्यालों तक,
मोती से दो दाने आये।
इन लाल कमानी अधरों तक,
मन के बिखरे गाने आये।

क्षण में जो मोती मचल गये,
मन के भी गाने निकल गये।
कुछ अस्वर से कुछ सत्वर से,
क्या तार तुम्हारे ढीले हैं।

ये नयन तुम्हारे गीले हैं।

२७

ये मेघ तुम्हारे आये हैं!

मस्ती में मधु के घूँट पिये,
बस्ती में जी का प्यार लिये,
छम-छम बूँदें चम-चम बिजली-
बारात सँजोये आये हैं।
ये मेघ तुम्हारे आये हैं।

मैंने अपना सिंगार किया,
इन प्राणों ने सत्कार किया,
अपनी नयनों की कलशी में-
जो नयना-जल भर लाये हैं।
ये मेघ तुम्हारे आये हैं।

धीरे धीरे अनजान कहीं,
मन चातक की ध्वनि टेर रही,
ये मेरे मन के तृष्णाकुल-
बूंदें बन बन कर आये हैं।
ये मेघ तुम्हारे आये हैं।

२८

प्यार के बादल बरस कर,
आँख का आँगन भिगोते।

आँख का आँगन भिगोते,
प्यार के बादल बरस कर।
कौन सी री आज मदिरा,
ये चले हैं खूब पीकर।

जो उतर कर दूर नभ से,
दग्ध अन्तर में समाते।
आज प्रिय का नव वरण ले,
अँकुरों में निकल आते-

और आँखों में मचलकर
प्रीत की सीमा सँजो कर-
एक मस्ती सी लिये ये।
रूप का सावन सँजोते।

प्यार के बादल बरस कर।
आँख का आँगन भिगोते।

———

(२६)

ये मेरे सुख दुख के बादल।

ये श्याम वरण कजरारे री ,
इन में मधु की बरसात छिपी ।
ये धूप छाँह सी छाया री ,
इनमें सुख दुख की बात छिपी ।

ये आँखों में मतवाले हैं ,
अपनी आँखों के पानी से
लो भिगो चले हिय का आँचल ।
ये मेरे सुख दुख के बादल।

जीवन में साँझ सकारे री ,
प्रातः सँध्या बन आते हैं ।
अपनी अंतर की थाली में ,
प्रिय का सिंगार सजाते हैं

रिमझिम में खूब विहँस कर ये,
फिर इन्द्र धनुष के रंगों से
लो छोड़ चले पूजा का जल ।
ये मेरे सुख दुख के बादल ।

विद्युत से दीप जलाये हैं ,
अंबर के ढाँक सितारे री ।
मोती से हार पिरोये हैं ,
अपने मंदिर के द्वारे री ।

भर मदिर दृगों में लाली सी,
उन उष्ण द्रवित सी कोरों में ,
लो घोल चले अपना काजल ।
ये मेरे सुख दुख के बादल ।

३०

बादलों का चीर अंतर,
चमक कर बिजली समाई।

देख कर ये क्षुब्ध बादल,
धड़कती है और धड़कन।
साँस में मिल मचल जाती,
तड़पती सी मूक तड़पन।

दूर के चलचित्र लेकर,
ऊर्ध साँसों से हुई जो-
वेदना की है सगाई।

भर गये कुछ स्वप्न लेकर,
आँख के तारे पलक में।
ढल गया पानी गगन से,
एक अंतर की छलक में।

पीर में मधु रस लिये कुछ
अश्रु की लड़ियाँ सँवारे-
प्राण! जीवन की इकाई।

अतृप्त अधरों के किनारे,
रह गये एक दाह लेकर।
एक झँझावात को वे,
सह गये एक आह लेकर।

फट गये बादल विकल जो
बरस क्षण में कर गये हैं
मूक प्राणों की तराई।

बादलों का चीर अंतर
चमक कर बिजली समाई।

३१

बिजली चमकी पानी बरसा।

नभ के अँतर में चमक गई,
मधु भार लिये चम चम रानी।
मदमाती पीड़ा पिघल गई,
हो धरती पर रिमझिम पानी।

छिप गया सजीली बदली में,
मस्ती लेकर स्नात गगन।
जिसके इंगित पर झूम गया,
मेरा चंचल सुकुमार पवन।

फिर मौन गली आई झंझा -
धीरे से प्राणों में सहसा।
बिजली चमकी पानी बरसा।

बीती सदियों के स्वप्न हंसे,
सतरंगी चूनरिया पहने।
इस बूँदा - बाँदी से उतरे,
धरती पर पीड़ा के गहने।

इस दूर्वादल पर चमक गये,
बन कर जुगनू नभ के तारे।
दृग के फूलों पर बिखर गये,
मीठे हो ये आँसू खारे।

प्रिय पलकों से सस्मित आई,
मधु की धीरे धीरे वरषा।
बिजली चमकी पानी बरसा!

३२

तुमने जो आँसू चार दिये !

बोलो तो कब तक भर सकतीं
विकसित सुमनों की पंखुड़ियाँ।
शूलों की नोंकों पर कैसे -
थमतीं नीहारों की लड़ियाँ।

तो फिर मेरा क्या दोष हुआ,
आँखों से जिनको ढार दिये।
तुमने जो आँसू चार दिये !

तुमने जो टूटे तार दिये।

बोलो स्वर कब तक थम सकता-
जिसकी वीणा के स्वर भीरे।
सोचो तो कैसे गा सकते-
बेकल आहों में स्वर धीरे।

तो फिर मेरा क्या दोष हुआ
जिनको मैंने झंकार दिये।
तुमने जो टूटे तार दिये।

तुमने जो जो उदगार दिये।

अपनी गति की भुज पाशों में -
तुमने जो जो अभिसार दिये।
मेरे जीवन में सज धज कर
तुमने जो जो सिंगार दिये।

तो फिर मेरा क्या दोष हुआ
जिनको मैंने विस्तार दिये -

तुमने जो आँसू चार दिये!
तुमने जो टूटे तार दिये!
तुमने जो जो उदगार दिये!

३३

बेदना मधु में मिली है।

एक झँझावात लाई,
कौन सी जी की भरन है।
स्वाँस में आँसू पिरोये,
जो खड़ी अब तक लगन है।

साधना आराधना ले-
कर विजन साकार आई।
बन मुकुल की एक पंखुड़ि,
शूल का आधार लाई।

पर विहँस कर कौन सी यह,
टीस सुमनों में खिली है।
बेदना मधु में मिली है।

३४

जिसकी कोमल सी कोंपल पर-
नीहार निछावर हैं नभ के।

यह तो सुख दुख का बीज अरे!
जिसमें सुख का कण सोया है।
एक दिन वह भी तो जागेगा,
जिस पर दुख का कण रोया है।

मत इन्हें निराशा कण जानो
ये तो अँतर के पहचाने।
गुप चुप जो विहँस निकलते हैं,
तुम इन्हें न समझो वीराने।

जिन पर हग का झरता बादल,
जो कल के सपनों की क्रीड़ा।
खेला करती जो जीवन में,
वह समझ न जाना तुम पीड़ा-

जिसकी कोमल सी कोंपल पर
नीहार निछावर हैं नभ के।

३५

सखि ! प्यार लिये क्षण आते हैं ।

सो गया सिहर तरु का पंछी ,
मादक सपनों की गलियों में ।
जिसके अंतर की गीत कड़ी ,
अवरुद्ध निशा की घड़ियों में ।

तब गीत स्वप्न फिर दुहराने ,
भुनसार लिये क्षण आते हैं ।
सखि ! प्यार लिये क्षण आते हैं ।

नव की वह एक लहर छूती ,
धीरे धीरे सौरभ लेकर ।
हो गई बसंती यौवन पर ,
कह गये कहीं कोकिल के स्वर ।

कुँजों की सूखी बाहों में ,
रस ज्वार लिये क्षण आते हैं ।
सखि ! प्यार लिये क्षण आते हैं ।

कलिका डंठल पर सरम गई ,
पाँखों में सरस पराग लिये ।
अलि !प्राणों में गुंजार उठी ,
भर साँसों में रस राग लिये ।

मधु की मस्ती में झूम झूम ,
अभिसार लिये क्षण आते हैं ।
सखि ! प्यार लिये क्षण आते हैं ।

२६

प्यार पीर की पगडंडी पर ,
चलने वाला चलता रहता ।

पतझर की सूखी डालों पर ,
मधुमास प्यार का आता है ।
लख कुसुम-कली की है बेला ,
तब शूल सँवरना आता है ।

पर न कभी टीसें उठतीं हैं ,
खिलने वाला खिलता रहता ।
प्यार पीर की पगडंडी पर ,
चलने वाला चलता रहता ।

आँखों में मादक सपने भर ,
उर में पीर लिए दृग-परियाँ ।
खिल जातीं हैं भर जातीं हैं ,
सजल सजीली दो पंखुड़ियाँ ।

पर न कभी धारा रुकती है.
झरने वाला झरता रहता ।
प्यार पीर की पगडंडी पर ,
चलने वाला चलता रहता ।

संध्या के मृदुकल कूँजन से -
मोहित होता रहा प्यार है !
जिसका हरदम पंथ रोकने ,
चला तिरोहित अँधकार है ।

किन्तु तिमिर में लिये चाँदनी ,
बढ़ने वाला बढ़ता रहता ।
प्यार पीर की पगडंडी पर ,
चलने वाला चलता रहता ।

३७

जिन्दगी की राह में बस
चाहता हूँ गीत के स्वर !

सिन्धु सीं ये लोल लहरें ;
ढूंढतीं अपना किनारा ।
मैं किनारे तक चला हूं ,
जिन्दगी का ले सहारा ।

आँसुओं से प्यार मेरा ,
जिन्दगी की छाँह में है ।
वेदना से प्यार मेरा ,
जिन्दगी की राह में है ।

स्वप्न मेरे फूल से हैं,
शूल में मेरी जवानी।
चल पड़ी ले आँसुओं में,
जिन्दगी अपनी कहानी।

चेतना में प्यार मेरा,
जीत! मेरे गीत में है।
ठोकरों में प्यार मेरा,
जीत! मेरी प्रीत में है।

प्रीत! मेरी जिन्दगी से,
जिन्दगी संगीत में है।

जिन्दगी के चाहने को-
प्रान में हैं प्रीत के स्वर।
जिन्दगी की राह में बस,
चाहता हूं गीत के स्वर।

शुद्धि-पत्र

पेज नं०	लाइन नं०	अशुद्ध	शुद्ध
२	१६	अभिर्भाव	आभिर्भाव
३	१६	सुधी	सुधि
४	७	दमिनी	दामिनी
४	१५	मदमरी	मदभरी
४	२४	अर्लिगन	आर्लिगन
४	५	चन्द्र	चन्द्रा
१३	२	पर झूम	को चूम
१८	४	चरणों मं	जीवन की
२७	३	लेती	आई
३६	१०	धरों	धरो
४१	–	तूँ	तू
४१	१०	अनहोंना	अनहोना
४१	११	गढ़ी	गढ़ी

कवि की अप्रकाशित कृतियां

कांटों के फूल	...	(कविता संग्रह)
इन्द्रजाल	...	,,
डगमग पग	...	(उपन्यास)
रस के लोभी	...	,,
सड़क की धूल	...	(कहानी संग्रह)

Cover Printed by:— Patel Litho & Printing Works, Sagar.